

Dr. Kishore
Kumar

ISSN (P) : 0976-5259
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 3.8942

शोध मंथन

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. - IX

No.- 3

UGC Approved Journal No. 40908



38

Editor:

Dr (Capt.) Anjula Rajvanshi

JOURNAL ANU BOOKS

Delhi

Meerut

www.anubooks.com

ISSN: (P) : 0976-5255 (e) : 2454-339X
Impact Factor 5.463 (SJIF)

शोध मंथन हिन्दी शोध पत्रिका

A Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi

Vol. 9 No. 3

Sep. 2018

U. G. C. Approved List No. 40908

<https://doi.org/10.31995/shodhmanthan>

अनुक्रमणिका

1. खाद्यान समस्या: कारण एवं निवारण
डॉ० अनूप सिंह सांगवान 1
2. बाजार का, समाजशास्त्र: बदलते हुये ग्रामीण प्रतिमान
हरिनन्दन कुशवाहा, डॉ० विनीता लाल 10
3. किशोरों की बुद्धि लब्धि एवं उनके लिंग के मध्य सम्बन्ध
डॉ० श्वेता शर्मा 16
4. आर्थिक सुधार में भारतीय बैंकिंग का योगदान
डॉ० मो० सनउवर अली 23
5. संघीय व्यवस्था में राज्यपालों की भूमिका:
विविध वैधानिक पहलुओं का अध्ययन (उ० प्र० के विशेष सदर्भ में)
डॉ० आशुतोष पाण्डेय 32
6. चित्रकार सतवंत सिंह के रेखाचित्रों का अद्भुत संसार
डॉ० कविता सिंह 38
7. लोकतंत्र एवं निर्वाचन सुधार : चुनौतियाँ एवं समाधान
इम्तियाज अहमद 43
8. जयप्रकाश नारायण - समाजवाद से सर्वोदय की ओर
डॉ० किशोर कुमार, डॉ० अनिल कुमार सिंह 50
9. महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत महिला कबड्डी खिलाड़ियों
के शारीरिक एवं शरीर क्रियात्मक चरों पर योग का प्रभाव
डॉ० जितेन्द्र कुमार बालियान 57

जयप्रकाश नारायण - समाजवाद से सर्वोदय की ओर

डॉ० किशोर कुमार
एजेंट प्रो०, इतिहास विभाग
क० मा० राजकीय म०
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर, भारत
Email: dr.kumarkishor@gmail.com

डॉ० अनिल कुमार सिंह
पीएच० डी० शोधार्थी,
मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़
राजस्थान, राजस्थान
भारत
Email : aks.ssvic@gmail.com

सारांश

जय प्रकाश नारायण आधुनिक भारत के राजमर्मज्ञों में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं यह शोध पत्र उनके मौलिक विचारों को विश्लेषित करने, मार्क्सवाद के प्रति उनके रुझान एवं अंततः महात्मा गांधी के सर्वोदय के विचारों पर उनकी दृढ़ आस्था को व्यक्त करने का संक्षिप्त प्रयास है।

प्रस्तावना

जय प्रकाश नारायण आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक के साथ साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अजेय सैनानी, जननायक एवं स्वतंत्र भारत में व्यवस्था परिवर्तन की आवाज बुलन्द करने वाले योद्धा थे। जय प्रकाश नारायण जी अपने छात्र जीवन में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गये हुए थे। इस दौरान उनकी मुलाकात पोलैण्ड के ऐत्रम लैण्डी नामक छात्र से हुयी। जो कट्टर मार्क्सवादी एवं साम्यवादी था। उसी के कारण जय प्रकाश नारायण की मार्क्सवाद में दिलचस्पी बढ़ी। उन्होंने अमेरिका में रहकर यह महसूस किया कि यहाँ सम्पन्नता के साथ-साथ गरीबी भी है। विस्कांसिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कहा करते थे कि पूँजीवाद में गरीबी की समस्या का कोई निदान नहीं है। इसका जय प्रकाश नारायण के विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन्ही दिनों में अमेरिका में साम्यवादी मार्क्सवादी नेता जो० लवस्टोन अपने विचारों का प्रचार एवं प्रसार कर रहे थे, उनके विचारों का प्रभाव भी जयप्रकाश नारायण पर पड़ा। मार्क्सवाद में दिलचस्पी बढ़ने के कारण उन्होंने अपने अमेरिकी प्रवास के दौरान मार्क्स, लेनिन, प्लेखानोव, एम. एन. राय, ट्राट्स्की आदि की पुस्तकों का विस्तार से अध्ययन किया। एम. एन. राय की पुस्तक 'आप्टर मैथ आफ नॉनकार्पोरेशन एवं इंडिया इन ट्रेजिशन और उन्ही द्वारा संपादित पत्रिका 'न्यू मासेस' से जे.पी. बहुत प्रभावित थे। इस तरह जय प्रकाश नारायण मार्क्सवादी एवं साम्यवादी बने। जे.पी. के शब्दों में, "अमेरिका में, विस्कांसिन में, मैडिसन में, मैं घोर कम्युनिस्ट था, घोर मार्क्सवादी बना, स्टालिनवादी नहीं"। विस्कांसिन में उनकी मुलाकात जो० लवस्टोन और मैनुएल

जैसे साम्यवादी नेताओं से हुआ। गोमेज ने जय प्रकाश नारायण को सलाह दी कि उन्हें जाकर हाल ही खुले हुए ओरिएण्टल विश्वविद्यालय में साम्यवादी विचारों एवं क्रांति के तरीकों की दीक्षा लेनी चाहिए। जय प्रकाश नारायण को यह विचार बहुत अच्छा लगा। जय प्रकाश नारायण मानसिक तौर पर मास्को जाने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपनी पत्नी प्रभावती जी को पत्र लिखकर साथ मास्को जाने की अपील की। किन्तु प्रभावती जी ने मास्को जाने से इंकार कर दिया और साथ ही जयप्रकाश नारायण को भी मास्को न जाने की सलाह दी। जब उनके पिता बाबू हरसू दयाल को जे०पी० के निर्णय की जानकारी हुई, तो वे काफी विचलित हुए। उन्होंने अपने समधी एवं बिहार कांग्रेस के नेता ब्रजकिशोर बाबू एवं शम्भू बाबू के माध्यम से डा० राजेन्द्र प्रसाद से जे०पी० को रुस न जाने के सम्बन्ध में पत्र लिखने हेतु आग्रह किया। डा० राजेन्द्र प्रसाद के पत्र का जे०पी० पर बहुत बड़ा प्रभाव नहीं पड़ा। घनाभाव के कारण जे० पी० को मास्को जाने की योजना स्थगित करनी पड़ी।

जे० पी० को अपनी माँ की अस्वस्थता का समाचार प्राप्त होने पर वे अपनी उच्च शिक्षा की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर सितम्बर 1929 में भारत लौट आये। भारत में जे०पी० मार्क्सवाद का प्रयोग भारतीय परिप्रेक्ष्य में करना चाहते थे। जे०पी० ने स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में कहा कि, "मेरे लिए केवल स्वतन्त्रता ही पर्याप्त नहीं है। इसका अर्थ होना चाहिए सबकी स्वतन्त्रता। जो लोग निम्न स्तर पर है, उनकी स्वतन्त्रता। इस स्वतन्त्रता में शोषण से, भुखमरी से, और दरिद्रता से मुक्ति भी शामिल होनी चाहिए। मैं नहीं कह सकता कि वे कौन से पूर्व अनुभव थे, जिसने मेरे अवचेतन मस्तिष्क में गरीबों एवं पीड़ितों के प्रति सहानुभूति की बुनियाद डाल दी थी। मार्क्सवाद ने उसे प्रस्फुटित एवं प्रौढ़ करके प्रत्यक्ष में ला दिया"। जे० पी० का परिवार एक मध्यवर्गीय परिवार था। उन्हें अपने परिवार से बहुत कम आर्थिक सहायता मिल पाती थी ऐसी स्थिति में अपने दैनिक खर्च एवं विश्वविद्यालय के शिक्षण के लिए फीस की आवश्यकता की पूर्ति हेतु सामान्य मजदूर की तरह खेतों, रेस्तराओं एवं कारखानों में कार्य करना पड़ा। समता का महत्व उनके लिए उतना ही महत्वपूर्ण था, जितना आजादी का आदर्श। जे० पी० का मानना था कि उनके लिए आजादी का अर्थ व्यापक है। स्वतंत्र भारत का अर्थ मेरे लिए समाजवादी भारत है और स्वराज से मेरा आशय था गरीब एवं पददलित लोगों का राज्य है। "जे०पी० को स्वतन्त्रता के लिए क्रांति का मार्क्सवादी सिद्धान्त, गांधी जी की सत्याग्रह की अपेक्षा अधिक सरल एवं शीघ्रगामी प्रतीत हुआ। जे०पी० कहते थे कि इस प्रश्न पर गांधी जी की स्थिति क्या थी उस समय में निश्चित रूप से नहीं जानता था दरअसल उन दिनों श्री एम.एन. राय जो लिखते थे, उसने मुझे विश्वास दिला दिया कि गांधी जी सामाजिक क्रांति के विरुद्ध है और संकट के समय जल्दी शोषण एवं असमानता की प्रणाली को स्वीकार कर लेंगे। उस समय मैं यह नहीं समझता था कि सामाजिक क्रांति के सम्बन्ध में गांधी जी के भी अपने विचार हैं, साथ ही उसके लिए उनके अपने तरीके भी थे।

जे०पी० भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल नहीं हुए क्योंकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कमिन्टर्न के द्वारा संचालित होती थी। सन 1924 में लेनिन की मृत्यु

। स्टालिन के नेतृत्व में रूस की विदेश नीति में व्यापक बदलाव आया। कमिन्टर्न की रूस की विदेश नीति के अनुरूप होती थी। स्टालिन ब्रिटेन का विरोध नहीं करना चाहता क्योंकि रूस चारों तरफ से पूंजीवादी व्यवस्था वाले देशों से घिरा था। इसलिए स्टालिन अपने देश में साम्यवादी शक्तियों की मजबूती में लगा था। सोवियत संघ में बड़ी संख्या में स्टालिन विरोधियों की झूठे आरोपों के आधार पर की गयी हत्याओं से उनका मन कम्युनिज्म के खिलाफ विद्रोह कर उठा। स्टालिन चाहते थे कि अन्य देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां भी उनके नियन्त्रण में हों। वे विश्व साम्यवाद के निर्विवाद नेता बने रहना चाहते थे। यदि कोई भी गैर रूसी व्यक्ति विश्व साम्यवाद के नेता के रूप में उनका उत्तराधिकारी बनने की चेष्टा करता तो उसे उसकी औकात बता दी जाती थी। यूगोस्लाविया के नेता मार्शल टीटो के सम्बन्ध में उक्त बातें सही साबित हुईं। कमिन्टर्न में ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी भारत का प्रतिनिधित्व करती थी, इन्हीं कारणों से कमिन्टर्न ने ब्रिटेन के विरुद्ध स्वाधीनता की लड़ाई में समर्थन नहीं किया। उपर्युक्त परिदृश्य में जे० पी० महसूस कर रहे थे कि एक ऐसा मंच गठित होना चाहिए, जिसमें ऐसे लोग आ सकें जो मार्क्सवादी विचारधारा के होते भी राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान कर सकें। उनका स्पष्ट मानना था कि कांग्रेस की नीतियों एवं गांधीवादी फार्मूले से देश के दलित एवं पिछड़े हुए लोगों की तकदीर नहीं बदली जा सकती।

जय प्रकाश नारायण अभी भी मार्क्सवादी थे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान उनको गिरफ्तार कर नासिक जेल में रखा गया। नासिक जेल में पहले से बंदी समाजवादी नेताओं मीनू मसानी, अच्युत पटवर्धन, एन. जी. गोरे, अशोक मेहता के साथ-साथ भूलानाई देसाई, मोरारजी देसाई जैसे लोगों से इनकी मुलाकात हुयी। नासिक जेल में बंद समाजवादी नेताओं में समाजवादी पार्टी के गठन, राष्ट्रीय आन्दोलन को और मजबूत बनाने आजादी के बाद स्वराज्य का स्वरूप कैसा हो, समाज के कमजोर एवं उपेक्षित लोगों को स्वतन्त्रता आन्दोलन से जोड़ने इत्यादि विषयों पर चर्चा होती थी। आमतौर पर सभी समाजवादी नेता इस बात पर सहमत थे कि पूंजीवादी व्यवस्था अपने अन्तरविरोधों से चरमरा कर गिर जायेगी क्योंकि बार-बार मन्दी एवं उछाल को नियन्त्रित नहीं कर पायेगी और शोषित जनता मुट्ठीभर सम्पन्न लोगों के विरुद्ध हिंसात्मक विद्रोह कर देगी। इतिहास ऐसे वर्ग-संघर्ष की कहानियों से भरा पड़ा है।

सन 1933 में जे० पी० जेल से छूटे। उसके कुछ समय बाद ही वे कांग्रेस समाजवादी पार्टी के गठन में लग गये। 17 मई 1934 को पटना के अंजुमन इस्लामिया हाल में समाजवादियों का एक सम्मेलन आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में हुआ जिसमें कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ, जिसमें जे० पी० को महासचिव चुना गया। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन कांग्रेस के अन्दर हुआ। क्योंकि वे किसी भी तरह कांग्रेस को कमजोर करना नहीं चाहते थे। उनका मानना था कि कांग्रेस स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए एक राष्ट्रीय मंच थी। किन्तु इस पार्टी के संस्थापक कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ थे। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के गठन को बहुत से कांग्रेसी नेताओं ने पसंद नहीं किया। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के मुख्य कार्यक्रमों में कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधार,

औद्योगिक मजदूरों की समस्याएँ, रजवाड़े का भविष्य संघर्ष, तथा जनता को लामबंद करने के लिए गांधीवादी तरीके जैसे विषय इसमें शामिल थे।

मार्क्सवादी चिंतन के कारण जे०पी० किसान एवं मजदूरों के आन्दोलनों को प्रधानता देते थे। माओं की तरह उनकी मान्यता थी कि भारत में क्रांति का सिपाही मजदूर की जगह किसान बनेगा। जे० पी० ने महसूस किया कि किसी आन्दोलन का जनाधार तभी मजबूत होगा। जब बड़ी संख्या में लोग उसमें शरीक होंगे। इसके लिए किसानों की सहभागिता आवश्यक है। क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत में मजदूर (औद्योगिक मजदूरों) की संख्या बहुत ही कम है और शहरों में सिमटे हुए हैं। उन्होंने सहकारी खेती एवं सामूहिक खेती की वकालत की। गाँवों के उत्थान एवं सत्ता के विकेन्द्रीयकरण पर जोर दिया। उनका स्पष्ट मानना था कि प्राकृतिक संसाधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं हो सकता। सामाजिक विषमता का मूल कारण व्यक्तिगत स्वामित्व ही है। इसलिए प्राकृतिक सम्पदा पर समाज का स्वामित्व होना चाहिए। 1936 में उनकी चर्चित पुस्तक 'Why Socialism' (समाजवाद क्यों) प्रकाशित हुई जिसमें समाजवाद की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस पुस्तक में गांधी जी की आलोचना की थी। फिर भी उसकी एक प्रति महात्मा गांधी को भेज दी थी।

गांधी जी के विचारों के प्रबल विरोधी होते हुए भी जे० पी० कई मामलों में पूर्णतः गांधीवादी थे। 1940 के दशक के उत्तरार्ध में जय प्रकाश नारायण का झुकाव गांधीवादी विचारधारा की ओर होने लगा और कालान्तर में जे० पी० गांधीवादी रंग में रंग गये। इससे पूर्व भी गांधी जी और जे० पी० की सोच में लोकशक्ति के मुद्दे पर अटूट साम्यता थी। गांधी जी सदैव लोकसत्ता को मजबूत करने के पक्षधर थे क्योंकि उनका मानना था कि केवल राजसत्ता के जरिये कोई व्यापक परिवर्तन समाज में नहीं किया जा सकता है। इसी कारण आजादी प्राप्त होने के बाद गांधी जी कांग्रेस को एक लोकसेवक संघ में परिवर्तित करना चाहते थे। अपनी हत्या के एक दिन पहले 29 जनवरी 1948 को गांधी जी ने कांग्रेस के संविधान में सुधार करने के लिए एक मसौदा तैयार किया था। इसमें उन्होंने लिखा कि "कांग्रेस ने देश को स्वाधीनता दिलाकर एक बहुत बड़ा काम किया है किन्तु अभी उसे बहुत बड़े-बड़े काम करने हैं। देश को राजकीय स्वतन्त्रता मिली है। किन्तु अभी जनता की ओर खासकर गाँवों की आर्थिक सामाजिक तथा नैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कराना बाकी है। भारत लोकतन्त्र की दिशा में जैसे जैसे आगे बढ़ता जायेगा वैसे-वैसे नागरिक शक्ति और सैनिक शक्ति के बीच संघर्ष खड़ा होने की संभावना है। इसलिए सैनिक शक्ति नागरिक शक्ति के नियन्त्रण में रहे, ऐसी समाज रचना हमें करनी है।"

धीरे धीरे जे० पी० के मन में अहिंसा के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा था। रूस की क्रांति और उसके बाद रूस में घटी घटनाओं ने जे० पी० की विचारधारा पर प्रभाव डाला। जे० पी० महसूस करने लगे कि शुद्ध साध्य तक पहुँचने के लिए शुद्ध साधन की आवश्यकता होगी। गांधी की हत्या के बाद जे० पी० का हिंसा से विश्वास उठ गया। इस बात की पुष्टि सन 1948 के कांग्रेस समाजवादी पार्टी (परिवर्तित नाम समाजवादी पार्टी) के छठे अधिवेशन में महामंत्री की हेसियत से उनके दिये गये भाषण से स्पष्ट होता है। जिसमें उन्होंने कहा कि 'शुद्ध साधन के

समाजवाद की स्थापना नहीं हो सकती। "गांधी जी ने हमें बहुत सी बातें सिखायी हैं।
किन्तु उनमें सबसे बड़ी सिखावन यह है कि साधन ही साध्य है। यह कि बुरे साधनों से कभी
अच्छे परिणाम की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह कि अच्छे साधनों की प्राप्ति के लिए साधन भी
अच्छे होने चाहिए। हम में से कुछ इस सत्य के बारे में शंकालू होंगे परन्तु हाल की घटनाओं ने
मुझे यह प्रतीति करा दी है कि अच्छे साधनों के सहारे ही अच्छे समाज के लक्ष्य पर जिसे
समाजवाद कहा जाता है। हम पहुच सकते हैं।"⁹

गांधी जी की दूसरी पुण्य तिथि पर सर्व सेवा संघ द्वारा तैयार की गयी सर्वोदय योजना
देश के समस्त प्रस्तुत की गयी। लगभग इसी समय वर्धा में भी एक सर्वोदय योजना प्रस्तुत की
गयी जिसके प्रणेता श्री विनोबा भावे थे। इस योजना में एक जाति - विहीन, वर्गहीन, अहिंसक,
शोषण मुक्त, सहकारी समाज बनाने की कल्पना थी। जिसमें सबको समान अवसर मिलेंगे। इसमें
प्रतियोगी अर्थव्यवस्था की जगह सहकारी सामाजिक अर्थव्यवस्था स्थापित करने का सुझाव था।
इस सम्बन्ध में जे० पी० का विचार था कि स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व की पुरानी ज्योति,
जिसने मेरे जीवन का रास्ता प्रशस्त किया था और जिसने मुझे लोकतान्त्रिक समाजवाद की ओर
लायी थी। मुझे खेद है कि मैं अपनी जीवन यात्रा में जब गांधी जी हमारे बीच विद्यमान थे, इस
स्थल पर नहीं पहुच सका। फिर भी कुछ समय पूर्व मुझे विश्वास हो गया था कि हमारा आज
का समाजवाद मानव-जाति को स्वतन्त्रता बन्धुत्व, समानता और शांति के उत्कृष्ट लक्ष्य तक नहीं
ले जा सकता।..... जब तक समाजवाद सर्वोदय में रुपान्तरित नहीं हो जाता, वे लक्ष्य इसकी
पहुच से बाहर रहेंगे और जिस प्रकार हम आजादी के आनंद से वंचित रह गये, वैसे ही हमारे
आने वाली पीढ़ियों को समाजवाद से वंचित रहना पड़ सकता है।⁹

श्री विनोबा भावे पवनार आश्रम से सैकड़ों मील पैदल चलकर हैदराबाद पहुचे और वहां
सर्वोदय सम्मेलन में सम्मिलित हुए। बाद में आन्ध्र प्रदेश के नलगौंडा जिला के पोचमपल्ली गांव
की एक प्रार्थना सभा के बाद 40 अछूत परिवारों ने उनसे जमीन उपलब्ध कराने का आग्रह किया
ताकि वे अपनी जीविका का उपार्जन कर सकें। इसी सभा में मौजूद रामचन्द्र रेड्डी ने 100 एकड़
जमीन दान में दे दी। विनोबा जी कहते हैं कि मेरे लिए यह घटना साधारण घटना नहीं थी क्योंकि
जिस जमीन के लिए खून-कत्ल होते हैं, कोर्ट - कचहरी होती रहती है। वह जमीन दान में
मिली है। इसके पीछे कोई संकेत छिपा है। रात-भर चिंतन चला और मुझे अनुभव हुआ कि यह
एक इलहाम हो गया है। लोग प्रेम से जमीन दे सकते हैं। यही से मुझे भूदान आन्दोलन की प्रेरणा
मिली।¹⁰

मैं ब्राह्मण था ही, मैंने वामनावतार ले लिया और लोगों से भूमि दान मागना शुरु
किया।" विनोबा भावे ने भू-स्वामियों से अपनी भूमि का छठा हिस्सा छठे पुत्र के हिस्से के रूप
में दान मागा¹²। जे० पी० कहते हैं कि शुरु में मैंने आन्दोलन की सार्थकता के बारे में संदेह किया
किन्तु स्वयं महसूस किया, कि यदि विनोबा जी जैसे व्यक्ति ने यह शुरु किया है तो केवल शिगुफा
नहीं हो सकता है। इसी उधेडबुन में जे० पी०, विनोबा जी से मिले और उनकी संकल्पना पर चर्चा
की। जे० पी० ने महसूस किया कि उन्हें स्वयं अनुभव करना चाहिए। इसलिए बिहार के गया

और 7 दिनों में साढ़ेसात एकड़ भूमि दान में प्राप्त हुयी। भाव विमोह होकर जे०पी०
के गांधी जी के जीवन काल में बराबर उनकी ओर खिचत आत हुए भी मैं पूरी तरह
नहीं सका था कि इस अहिंसक पद्धति से सामाजिक क्रांति कैसे होगी। राष्ट्रीय
रंजन के समय उस पद्धति ने कैसे काम किया था, यह मुझे गालूम था किन्तु उन्ही साधनों
समाजवाद और पूंजीवाद कैसे नाश होंगे और कैसे नये समाज का निर्माण होगा, यह चीज मेरी
झुंझ में बिल्कुल नहीं आयी थी। मैंने हृदय परिवर्तन के द्वारा क्रांति पर गांधी जी के लेख अवश्य
पढ़े थे। किन्तु प्रत्यक्ष प्रदर्शन या व्यवहार के अभाव में वे विचार मुझे अत्यन्त अव्यवहारिक लग
थे।¹³ जय प्रकाश नारायण भूदान आन्दोलन में कूद पड़े क्योंकि "भूदान में सम्पूर्ण क्रांति के बीज
नीहित हैं।"¹⁴

उपर्युक्त विवेचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि जय प्रकाश नारायण अपनी
विवेचनाओं का भारत बनाने के लिए मार्क्सवाद एवं समाजवाद को ही एक मात्र साध्य के रूप
में महसूस करते है परन्तु भारतीय समाज की गहन विवेचना और महात्मा गांधी के सम्पर्क एवं
विचारों के पश्चात उन्हें यह महसूस हो जाता है कि गांधी जी का सर्वोदय ही भारतीय परिपेक्ष्य
में समग्र विकास का सबसे बेहतरीन एवं पवित्र साधन है।

संदर्भ

- 1- ऐग्रम लैण्डिंग- पोलैण्ड निवासी यहूदी छात्र, जो कट्टर मार्क्सवादी एवं साम्यवादी पार्टी का
सदस्य था। जय प्रकाश नारायण- सुधांसु रंजन-राष्ट्रीय पुस्तक -मास, भारत, नई दिल्ली, 2014
पृष्ठ सं० 18।
- 2- गोमेज- मैनुएल गोमेज प्रसिद्ध अमेरिकी साम्यवादी नेता, जो उन दिनों अमेरिका में अपने
विचारों का प्रसार व प्रसार कर रहे थे और विस्कॉसिन में जे० पी० से मिले। जय प्रकाश नारायण-
सुधांसु रंजन-राष्ट्रीय पुस्तक -मास, भारत, नई दिल्ली, 2014 पृ० सं० 19।
- 3- समाजवाद से सर्वोदय की ओर- जय प्रकाश नारायण - सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट,
वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या-12
- 4- समाजवाद से सर्वोदय की ओर- जय प्रकाश नारायण - सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट,
वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या-15
- 5- समाजवाद से सर्वोदय की ओर- जय प्रकाश नारायण - सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट,
वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या-12
- 6- कमिन्टर्न-कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का संक्षिप्त नाम है।
- 7- जय प्रकाश नारायण- सुधांसु रंजन - राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली 2014 पृष्ठ
संख्या-90
- 8- जय प्रकाश नारायण- सुधांसु रंजन - राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली 2014 पृष्ठ
संख्या-93

- 10- समाजवाद से सर्वोदय की ओर- जय प्रकाश नारायण - सर्व सेवक संघ प्रकाशन, बनारस, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या-31
- 11- अहिंसा की तलाश- संकलनकर्ता कालिन्दी- प्रथम प्रकाशन, बनारस की 118 नं. संख्या-133
- 12- अहिंसा की तलाश- संकलनकर्ता कालिन्दी- प्रथम प्रकाशन, बनारस की 118 नं. संख्या-134
- 13- जय प्रकाश नारायण- सुधासु रंजन - राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली 110 नं. संख्या-120
- 14- समाजवाद से सर्वोदय की ओर- जय प्रकाश नारायण - सर्व सेवक संघ प्रकाशन, बनारस, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या-54
- 15- समाजवाद से सर्वोदय की ओर- जय प्रकाश नारायण - सर्व सेवक संघ प्रकाशन, बनारस, वाराणसी 2013, पृष्ठ संख्या-57